

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ तिरसठ

भविष्यवाणी का अनावरण: दानियेल के ग्यारहवें अध्याय का अन्वेषण

Jeff Pippenger

2024-03-28

अब हम दानियेल के ग्यारहवें अध्याय का अध्ययन आरंभ करेंगे।

और मैं, मादी दारयावेश के प्रथम वर्ष में—हाँ, मैं ही—उसे स्थिर करने और उसे बल देने के लिए खड़ा रहा। और अब मैं तुझे सत्य बताऊँगा। देख, फारस में अभी तीन राजा और उठेंगे; और चौथा उन सब से कहीं अधिक धनी होगा, और अपनी धन-सम्पत्ति से प्राप्त सामर्थ के द्वारा वह सबको यूनान के राज्य के विरुद्ध उकसाएगा। और एक पराक्रमी राजा उठेगा, जो बड़े अधिकार के साथ राज्य करेगा और अपनी इच्छा के अनुसार करेगा। परन्तु जब वह उठेगा, तो उसका राज्य टूट जाएगा और स्वर्ग की चारों दिशाओं में बाँट दिया जाएगा; और वह उसके वंशजों के लिए न रहेगा, और न उतने अधिकार के अनुसार होगा जिसके साथ उसने राज्य किया था; क्योंकि उसका राज्य उखाड़ लिया जाएगा और उनसे भिन्न अन्य लोगों को दे दिया जाएगा। दानियेल 11:1-4.

गेब्रियल शुरुआत में दानियेल को यह बताता है कि वह दार्यावेश के पहले वर्ष में भी उसके साथ कार्य कर चुका था, जो वह वर्ष था जब दार्यावेश के भतीजे, उसके सेनापति, ने बाबुल पर अधिकार कर लिया और बेलशस्सर को मार डाला। दसवें अध्याय की पहली आयत के अनुसार, दानियेल यह दर्शन कुरूश के तीसरे वर्ष में प्राप्त कर रहा है, इसलिए गेब्रियल दार्यावेश और कुरूश दोनों को "अंतकाल" का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों के रूप में चिह्नित कर रहा है। बेलशस्सर और बाबुल 538 ईसा पूर्व में मादी-फारसी साम्राज्य द्वारा पराजित किए गए।

“कुरूश ने बाबुल की घेराबंदी की, जिसे उसने 538 ईसा-पूर्व में युक्ति द्वारा जीत लिया, और बेलशस्सर की मृत्यु के साथ, जिसे फारसियों ने मार डाला, बाबुल का राज्य अस्तित्व में रहना बंद हो गया।” उरियाह स्मिथ, Daniel and the Revelation, 46.

ईसा पूर्व 538वें वर्ष में, दानियेल ने नौवाँ अध्याय लिपिबद्ध किया।

“पूर्ववर्ती अध्याय [अध्याय आठ] में अभिलिखित दर्शन बेलशस्सर के तीसरे वर्ष, ईसा पूर्व 538 में दिया गया था। उसी वर्ष, जो दारियावेश के प्रथम वर्ष भी था, इस अध्याय [अध्याय नौ] में वर्णित घटनाएँ घटीं।” उरियाह स्मिथ, डैनियल एंड द रिविलेशन, 205.

538 ईसा पूर्व में, दारियस के पहले वर्ष में, जो बेलशस्सर का तीसरा और अंतिम वर्ष था, प्रभु ने कल्दियों की भूमि को दंडित किया और उसे उजाड़ कर दिया।

और यह सारा देश उजाड़ और विस्मय का कारण हो जाएगा; और ये सब जातियाँ सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा की सेवा करेंगी। और जब सत्तर वर्ष पूरे हो जाएँगे, तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति को उनके अधर्म के कारण दण्ड दूँगा, यह प्रभु की वाणी है, और कल्दियों के देश को सदा का उजाड़ बना दूँगा। यिर्मयाह 25:11, 12.

दसवें पद में, प्रभु “के बाद” शब्द का प्रयोग करते हैं, जब वे बाबुल के दण्ड की ओर ले चलते हैं। बाबुल के उजाड़ किए जाने “के बाद,” प्रभु परमेश्वर की प्रजा के लिए अपना उत्तम कार्य पूरा करेंगे।

क्योंकि यहोवा यों कहता है: जब बाबुल में सत्तर वर्ष पूरे हो जाएँगे, तब मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और तुम्हारे विषय में अपने भले वचन को पूरा करूँगा, और तुम्हें इस स्थान पर लौटा दूँगा। यिर्मयाह 25:10.

सत्तर वर्षों की बंधुआई 606 ईसा पूर्व में शुरू हुई।

“70 वर्षों का प्रारम्भ ईसा पूर्व 606 में हुआ; दानियेल ने समझ लिया कि अब वे अपनी समाप्ति के निकट पहुँच रहे थे।” Uriah Smith, Daniel and the Revelation, 205.

सत्तर-वर्षीय बंधुआई 606 ईसा पूर्व में आरम्भ हुई, और 536 ईसा पूर्व में समाप्त हुई, जो 538 ईसा पूर्व में बेलशज्जर की मृत्यु और बाबुल के उजड़ने के दो वर्ष बाद था। वह कूरुश का तृतीय वर्ष था। गब्रिएल हिदेकेल नदी की भविष्यवाणी को कूरुश के तृतीय वर्ष में स्थापित करता है, और ग्यारहवें अध्याय के वृत्तांत का आरम्भ दारियावेश के प्रथम वर्ष का उल्लेख करके करता है, और ऐसा करते हुए वह दो विशिष्ट वर्षों की पहचान कर रहा है। 538 ईसा पूर्व और 536 ईसा पूर्व दोनों ही नियुक्त समय थे; 538 ईसा पूर्व वह नियुक्त समय था जब सत्तर वर्षों की भविष्यवाणी का समापन होना था, और 536 ईसा पूर्व वह नियुक्त भविष्यसूचक समय था जब 538 ईसा पूर्व के “बाद” प्रभु अपनी प्रजा के लिये अपना शुभ कार्य पूरा करेगा।

538 ईसा-पूर्व और 536 ईसा-पूर्व, दोनों “नियत समय” हैं, और उन्हें दो ऐतिहासिक व्यक्तियों द्वारा दर्शाया गया है—पहला मादी का प्रथम राजा, और दूसरा फारस का प्रथम राजा। शाब्दिक बाबुल में शाब्दिक इस्राएल की कैद के सत्तर वर्षों का अंत, 538 ईस्वी से 1798 तक आध्यात्मिक बाबुल में आध्यात्मिक इस्राएल के बंदी रहने के बारह सौ साठ वर्षों का प्रतीक था। 1798 एक “नियत समय” था, और तब वह काल आरंभ हुआ जिसे भविष्यवाणी में “अंत का समय” कहा जाता है। 538 ईसा-पूर्व और 536 ईसा-पूर्व, जिन्हें “नियत समय” के रूप में दिखाया गया है, “अंत का समय” कहलाने वाले काल के आरंभ को भी चिह्नित करते हैं।

“इस निरंतर उत्पीड़न की दीर्घ अवधि के दौरान पृथ्वी पर परमेश्वर की कलीसिया उतनी ही वास्तविक रूप से बंदी अवस्था में थी, जितने कि निर्वासन की अवधि में इस्राएल की संतानें बाबुल में बंधुआई में रखी गई थीं।” Prophets and Kings, 714.

समस्त भविष्यवाणी उन दिनों की अपेक्षा अधिक विशिष्ट रूप से अंतिम दिनों को संबोधित करती है, जिन दिनों में वे पहली बार पूरी हुई थीं; अतः 538 ईसा-पूर्व और राजा दारयवेश, तथा 536 ईसा-पूर्व और राजा कुसू, 1989 में “अंत के समय” का प्रतिनिधित्व करते हैं, और ये दोनों राजा राष्ट्रपति रीगन और प्रथम राष्ट्रपति बुश के प्रकारस्वरूप हैं। 538 ईसा-पूर्व और 536 ईसा-पूर्व एक ऐसे मार्गचिह्न का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस समझ के साथ पूरा होता है कि दोनों तिथियाँ उसी एक मार्गचिह्न का प्रतिनिधित्व करती हैं। “अंत के समय” का मार्गचिह्न दो प्रतीकों से मिलकर बना होता है, और कभी-कभी, जैसा कि रीगन और प्रथम बुश के साथ हुआ, दोनों प्रतीक उसी एक वर्ष में पूरे हो जाते हैं। परंतु यह नियम का अपवाद है, क्योंकि मूसा के समय में “अंत के समय” का मार्गचिह्न हासून और मूसा—दोनों के जन्म—था, जो तीन वर्षों से पृथक था। मसीह के इतिहास में, यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और मसीह का जन्म था, जो छह महीनों से पृथक था।

“अंत का समय” के संदर्भ में, मसीह-विरोधी के इतिहास में यह 1798 और 1799 के वर्ष थे। फ्रांसीसी क्रांति भविष्यवाणी का विषय है, और यह 1789 में शुरू हुई, और दस वर्ष तक चली, 1799 में अपने नियत समय पर समाप्त हुई, ठीक वैसे ही जैसे 1798 भी एक नियत समय था। साथ मिलकर वे उस पशु को दिए गए घातक घाव की पहचान करते हैं, और उस स्त्री की भी जो उस पशु पर सवार हुई और उस पर शासन किया। दारियस वह राजा था जिसने अपनी सेना को “दीवार” के रास्ते भीतर भेजकर अपने शत्रु को पराजित किया, और वह रीगन का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने “लौह परदा” की दीवार गिराकर अपने शत्रु को पराजित किया। साइरस पहले बुश का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि साइरस “महान साइरस” के रूप में जाना जाता है, और जॉर्ज बुश प्रथम “बड़ा बुश” है, और अंतिम बुश “छोटा बुश” है।

क्योंकि ये दोनों राजा और वे दो तिथियाँ जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, वास्तव में एक ही प्रतीक हैं। उनमें से एक बाबुल के शासन करने के सत्तर वर्षों को चिह्नित करता है। वह सत्तर-वर्षीय काल ई.पू. 538 में अपने नियत समय पर पहुँचा और उसका प्रतिनिधित्व दारा करता है। सत्तर वर्षों की बंधुआई की परिपूर्ति ई.पू. 536 में अपने नियत समय पर पहुँची और उसका प्रतिनिधित्व कूरुस करता है। ये दोनों मिलकर “अंत का समय” का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब

भविष्यवाणी का प्रकाश खोल दिया जाना था। 1798 में प्रकाशितवाक्य चौदह का पहला स्वर्गदूत "अंत के समय" में आ पहुँचा, और बहन वाइट कहती हैं कि वह स्वर्गदूत "और कोई नहीं बल्कि स्वयं यीशु मसीह" थे।

कुरुश के तीसरे वर्ष में, मीकाएल, जो परमेश्वर की प्रजा के राजकुमार और स्वर्गदूतों के महादूत हैं, कुरुश के साथ कार्य करने और उस प्रकाश की पुष्टि करने के लिए उतर आए, जो कुरुश को तीन फरमानों में से पहला घोषित करने के लिए मार्गदर्शन करता था—एक ऐसा फरमान जो परमेश्वर की प्रजा को यरूशलेम लौटने और नगर, पवित्रस्थान, तथा गलियों और दीवारों का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देता था। वह कार्य पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के कार्य का प्रतिरूप था, जो 1798 में "अंत के समय" में आरम्भ हुआ।

दारियस और सायरस के दिनों में अंत के समय मीकाएल का अवतरण, 1798 में प्रथम स्वर्गदूत के आगमन का प्रतिनिधित्व करता था, और दोनों मिलकर 1989 में "अंत का समय" पर उसी स्वर्गदूत के आगमन को चिह्नित करते हैं। 1989 ने "अंत का समय" की अवधि की शुरुआत की, और वह एक नियत समय भी था। एक नियत समय भविष्यसूचक समयावधि की समाप्ति को दर्शाता है। 1863 का विद्रोह, आधुनिक आत्मिक इस्राएल के लिए प्रथम "Kadesh" पर, एक सौ छब्बीस वर्षों की उस अवधि की शुरुआत था जो 1989 में "नियत समय" पर समाप्त हुई। एक सौ छब्बीस, बारह सौ साठ का दशमांश, अर्थात् दसवां भाग है, और 1798 में बारह सौ साठ वर्षों की समाप्ति पर, प्रथम स्वर्गदूत का आंदोलन इतिहास में आया। एक सौ छब्बीस वर्षों की समाप्ति पर, 1989 में, तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन इतिहास में आया।

दानियेल के अध्याय ग्यारह की पहली आयत में, गैब्रियल सावधानीपूर्वक और सटीक रूप से यह बताता है कि प्रस्तुत इतिहास की शुरुआत अंत के समय, 1989 में, साइरस से होती है। वहाँ महान साइरस, वरिष्ठ बुश का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके बाद तीन राजा होंगे, और फिर एक चौथा राजा होगा जो उन सब से कहीं अधिक धनी होगा। अतः वह चौथा धनी राजा, जो समूचे यूनान को उकसाता है, 1989 से गिने तो छठा राष्ट्रपति है।

अध्याय दस की घटनाओं में, दानियेल को शोक करते हुए दिखाया गया है, और शोक के अपने अनुभव में, दर्शन को देखते हुए, वह मसीह की प्रतिमा के अनुरूप रूपांतरित हो जाता है। इक्कीस दिनों का यह शोक-काल एक ऐसे मृत्यु-काल का प्रतिनिधित्व करता है जो पुनरुत्थान पर आकर समाप्त होता है। अध्याय दस में, मीकाएल स्वर्ग से उतर आया है, और यहूदा सात में, जब वह उतरता है, तो वह मूसा को पुनर्जीवित करता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में मूसा (और एलिय्याह) को घात किया गया है, और वे साढ़े तीन सांकेतिक दिनों तक सड़क पर मृत पड़े रहते हैं। तब मूसा (एलिय्याह के साथ) "एक बड़ी आवाज" द्वारा पुनर्जीवित किए जाते हैं।

और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन का आत्मा उनमें प्रविष्ट हुआ, और वे अपने पांवों पर खड़े हो गए; और जिन्होंने उन्हें देखा, उन पर बड़ा भय छा गया। और उन्होंने स्वर्ग से एक ऊंचा शब्द यह कहते हुए सुना, यहां ऊपर आओ। और वे बादल पर चढ़कर स्वर्ग में चले गए; और उनके शत्रुओं ने उन्हें देखा।
प्रकाशितवाक्य 11:11, 12.

"महान आवाज़" जो पुनर्जीवित करती है, वह महादूत की आवाज़ है, और वह महादूत माइकल है।

क्योंकि स्वयं प्रभु आदेश की पुकार, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी और परमेश्वर की तुरही के साथ स्वर्ग से उतरेगा; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। 1 थिस्सलुनीकियों 4:16.

वह इतिहास, जिसमें मूसा और एलिय्याह की हत्या की जाती है और उन्हें पुनर्जीवित किया जाता है, एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन का इतिहास है। वह इतिहास 11 सितम्बर, 2001 को प्रकाशितवाक्य अठारह के स्वर्गदूत की "पहली आवाज़" के साथ आरम्भ हुआ, जिसके विषय में सिस्टर व्हाइट यह पहचान कराती हैं कि वह उस समय आती है जब न्यूयॉर्क नगर की महान इमारतें गिरा दी गई थीं। प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की "दूसरी आवाज़" शीघ्र आने वाले रविवार-कानून के समय सुनाई देती है, जब परमेश्वर के दूसरे झुंड को बाबुल में से बाहर बुलाया जाता है। वही इतिहास, अर्थात् मुद्रांकन का इतिहास, वह है जिसमें दानियेल को "माराह" दर्शन को निहारने के द्वारा मसीह

की प्रतिमा में परिवर्तित होते हुए निरूपित किया गया है, जो "मारेह" दर्शन का स्त्रीलिंगी रूप है। यही वह "कारक" दर्शन है, जो उस प्रतिमा को, जिसे देखा जाता है, देखने वालों में पुनरुत्पन्न होने का "कारण" बनता है।

मुहरबंदी के उस इतिहास, और अध्याय दस में दानिय्येल के रूपांतरण के वर्णन में, मीकाएल के उस अवतरण का भी समावेश है, जब वह मूसा, एलिय्याह और दानिय्येल द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए लोगों को पुनर्जीवित और रूपांतरित करता है। वह प्रधान स्वर्गदूत की "बड़ी आवाज़" के साथ उस पुनरुत्थान को सम्पन्न करता है, और इस प्रकार पहली और अंतिम आवाज़ों के बीच एक तीसरी "आवाज़" प्रदान करता है; और पहली तथा अंतिम दोनों एक ही हैं, क्योंकि दोनों ही प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की आवाज़ हैं। बीच की आवाज़ वह स्थान है जहाँ विद्रोह का प्रतिनिधित्व होता है, क्योंकि जब मीकाएल ने मूसा को पुनर्जीवित किया, तब उसने शैतान से वाद-विवाद नहीं किया, यद्यपि विद्रोह का जनक शैतान वहाँ विरोध करने के लिए उपस्थित था।

तथापि प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल ने, जब वह शैतान के साथ मूसा के शरीर के विषय में विवाद कर रहा था, तो उसके विरुद्ध निन्दात्मक दोषारोपण करने का साहस न किया, परन्तु कहा, प्रभु तुझे डॉटे। यहूदा 7.

मुहरबंदी के उस समय का आरम्भ, जो 11 सितंबर, 2001 को प्रारम्भ हुआ और शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर समाप्त होता है, "सत्य" की हस्ताक्षर-छाप से चिह्नित है; क्योंकि उस अवधि के मध्य में, जुलाई 2023 में, प्रधानदूत के महान स्वर ने मसीह में मरे हुआओं को पुनर्जीवित करने का कार्य आरम्भ किया, जो उसके मध्य स्वर को सुनना चुनते हैं। ध्यान दें कि 2023, 2001 के बाईस वर्ष बाद आता है, और बाईस, दो सौ बीस का दशमांश है, जो दिव्यता और मनुष्यता के बीच की कड़ी का प्रतीक है, और पुनर्स्थापना का भी एक प्रतीक है।

जुलाई 2023 में वह सामर्थी स्वर्गदूत, जो स्वयं यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं है, और जो सत्य है, जो मीकाएल भी है, और जो अपने हाथ में एक संदेश लेकर उतरने वाला अल्फा और ओमेगा है। उसके हाथ की छोटी पुस्तक दानिय्येल का वही भाग है, जो अंतिम दिनों तक मुहरबंद रखा गया था।

प्रकाशितवाक्य में बाइबल की सारी पुस्तकें मिलती और समाप्त होती हैं। यहाँ दानिय्येल की पुस्तक का पूरक है। एक भविष्यवाणी है; दूसरी प्रकाशना है। जो पुस्तक मुहरबंद की गई थी, वह प्रकाशितवाक्य नहीं, बल्कि दानिय्येल की भविष्यवाणी का वह भाग है जो अन्तिम दिनों से संबंधित है। दूत ने आज्ञा दी, 'परन्तु तू हे दानिय्येल, इन वचनों को बन्द कर दे, और पुस्तक पर अन्त के समय तक मुहर लगा दे।' दानिय्येल 12:4। प्रेरितों के काम, 585।

दानिय्येल की भविष्यवाणी का जो भाग अन्त के दिनों से संबंधित है, वह ग्यारहवां अध्याय है। यह ग्यारहवें अध्याय के अंतिम छह पद हैं, पर अधिक सटीक रूप से कहें तो उन अंतिम छह पदों में उसी अध्याय में वर्णित ऐतिहासिक वृत्तांतों की पुनरावृत्ति की गई है।

"हमारे पास खोने के लिए समय नहीं है। संकटपूर्ण समय हमारे सामने है। संसार युद्ध की आत्मा से उद्वेलित है। शीघ्र ही वे संकट के दृश्य, जिनका उल्लेख भविष्यवाणियों में किया गया है, घटित होंगे। दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय की भविष्यवाणी लगभग अपनी पूर्ण परिपूर्ति तक पहुँच चुकी है। इस भविष्यवाणी की परिपूर्ति में जो इतिहास घटित हो चुका है, उसका बहुत-सा भाग पुनः दोहराया जाएगा।" Manuscript Releases, number 13, 394.

दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय का सोलहवाँ पद एक ऐसे इतिहास को दर्शाता है जो इकतालीसवें पद में पुनः दोहराया जाता है, क्योंकि उस पद में उत्तर का राजा मनोरम देश में खड़ा होता है। सोलहवें पद का इतिहास यह बताता है कि कब रोमी सेनापति पोम्पेय ने यहूदा और यरूशलेम को बंदीगिरी में ले गया।

परन्तु जो उसके विरुद्ध आएगा, वह अपनी इच्छा के अनुसार करेगा, और उसके सामने कोई ठहर न सकेगा; और वह शोभायुक्त देश में खड़ा होगा, जो उसके हाथ से नष्ट किया जाएगा। दानिय्येल 11:16।

मैं इस पद का उपयोग उन पदों के विचार के लिए एक आधार-बिंदु के रूप में करना चाहता हूँ जो इस पद से पहले आते हैं, इसलिए मैं पहले इस समझ को स्थापित करूँगा। हमारा उद्देश्य यह दिखाना है कि सिकन्दर महान के राज्य के विघटन के पश्चात् जो इतिहास पद तीन और चार में अनुसरण करता है, वह 1989 में आरम्भ होता है और फिर वर्तमान यूक्रेनी युद्ध, पश्चिम की शक्तियों पर पुतिन की विजय, तथा पुतिन की उसके पश्चात् पराजय की पहचान करता है, जो पद सोलह तक ले जाती है।

“यद्यपि मिस्र उत्तर के राजा अन्तियुखुस के सामने ठहर न सका, तौभी अन्तियुखुस रोमियों के सामने ठहर न सका, जो अब उसके विरुद्ध आ गए थे। अब कोई भी राज्य इस उदीयमान शक्ति का अधिक समय तक प्रतिरोध करने में समर्थ न रहा। ईसा पूर्व 65 में, जब पोम्पेई ने अन्तियुखुस एशियाटिकुस को उसकी संपत्तियों से वंचित कर दिया और सीरिया को एक रोमी प्रान्त बना दिया, तब सीरिया जीत लिया गया और रोमी साम्राज्य में मिला लिया गया।”

“उसी शक्ति को पवित्र देश में भी खड़ा होना था, और उसे भस्म करना था। रोम ईसा-पूर्व 161 में परमेश्वर की प्रजा, यहूदियों, के साथ संधि द्वारा संबद्ध हुआ, जिस तिथि से वह भविष्यद्वाणी की कालगणना में एक प्रमुख स्थान रखता है। तथापि, उसने यहूदिया पर अधिकार वास्तविक विजय के द्वारा ईसा-पूर्व 63 तक प्राप्त नहीं किया; और तब वह निम्नलिखित रीति से हुआ।

पॉटस के राजा मिथ्रिडेट्स के विरुद्ध अपने अभियान से लौटने पर, पॉम्पी के सामने यहूदिया के सिंहासन के लिए दो दावेदार, हिरकैनस और एरिस्टोबुलस, संघर्ष कर रहे थे। उनका मामला पॉम्पी के समक्ष आया, जिसने शीघ्र ही एरिस्टोबुलस के दावों की अन्यायपूर्णता समझ ली, पर उसने अपने लंबे समय से वांछित अरब के अभियान के बाद ही इस विषय में निर्णय स्थगित करना चाहा, यह वादा करते हुए कि वह तब लौटकर उनके मामले को जैसा न्यायसंगत और उचित प्रतीत होगा, वैसा निपटाएगा। पॉम्पी की वास्तविक भावना भाँपकर, एरिस्टोबुलस शीघ्र ही यहूदिया लौट गया, अपने लोगों को हथियारबंद किया, और दृढ़ रक्षा की तैयारी की, यह निश्चय करके कि किसी भी कीमत पर वह वह ताज बनाए रखेगा, जिसके किसी और के पक्ष में निर्णय हो जाने की उसे आशंका थी। पॉम्पी ने उस भगोड़े का निकट से पीछा किया। जब वह यरूशलेम के पास पहुँचा, तो एरिस्टोबुलस, अपनी चाल पर पछताने लगा, उससे मिलने बाहर आया और पूर्ण अधीनता तथा बड़ी धनराशि का वचन देकर मामला सुलझाने का प्रयास किया। पॉम्पी ने यह प्रस्ताव स्वीकार करते हुए, धन प्राप्त करने के लिए सैनिकों की एक टुकड़ी के नेतृत्व में गैबिनियस को भेजा। परन्तु जब वह उप सेनानायक यरूशलेम पहुँचा, तो उसने पाया कि फाटक उसके लिए बंद थे, और दीवारों के ऊपर से उसे यह बता दिया गया कि नगर उस समझौते पर कायम नहीं रहेगा।

इस प्रकार की छल-कपट को दंडमुक्त नहीं रहने देने हेतु, पोम्पेय ने एरिस्टोबुलस—जिसे वह अपने साथ रोके हुए था—को बेड़ियों में जकड़ दिया, और तुरंत अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम पर कूच कर दिया। एरिस्टोबुलस के समर्थक उस स्थान की रक्षा के पक्ष में थे; हाइर्कानुस के समर्थक फाटकों को खोल देने के। दूसरे पक्ष की संख्या अधिक होने और वही हावी रहने से, पोम्पेय को नगर में निर्बाध प्रवेश दे दिया गया। तब एरिस्टोबुलस के अनुयायी मंदिर पर्वत पर जा डटे; उस स्थान की रक्षा का उनका संकल्प उतना ही दृढ़ था जितना उसे अधीन करने का पोम्पेय का। तीन महीनों के अंत में दीवार में इतनी बड़ी संध कर दी गई कि धावा बोला जा सके, और उस स्थान पर तलवार के बल पर कब्जा कर लिया गया। इसके बाद हुए भयानक संहार में बारह हजार व्यक्ति मारे गए। इतिहासकार लिखता है कि यह अत्यंत मर्मस्पर्शी दृश्य था—उस समय ईश-सेवा में लीन पुरोहित शांत हाथों और अडिग संकल्प के साथ अपना अभ्यस्त कार्य करते रहे, मानो चारों ओर की उन्मत्त हलचल से अनजान हों, जबकि उनके चारों तरफ उनके अपने लोग मारे जा रहे थे, और अक्सर उनके अपने रक्त का भी मिश्रण उनके बलिदानों के रक्त से हो जाता था।

युद्ध का अंत कर, पोम्पे ने यरूशलेम की प्राचीरें ढहा दीं, यहूदिया के अधिकारक्षेत्र से कई नगरों को निकालकर उन्हें सीरिया के अधिकारक्षेत्र में दे दिया, और यहूदियों पर कर लगा दिया। इस प्रकार पहली बार यरूशलेम को विजय द्वारा उस शक्ति के हाथों में सौंप दिया गया, जो "महिमामय देश" को तब तक अपनी लोहे की पकड़ में

जकड़े रखने वाली थी जब तक कि वह उसे पूरी तरह नष्ट न कर दे। उरियाह स्मिथ, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य, 259, 260.

हम अपने अगले लेख में इस अध्ययन को जारी रखेंगे।

परमेश्वर के लोगों के बीच विवाद या हलचल का न होना इस बात का निर्णायक प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए कि वे स्वस्थ सिद्धांत को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं। यह आशंका करने का कारण है कि वे सत्य और असत्य के बीच स्पष्ट भेद नहीं कर रहे हो सकते। जब शास्त्रों की जांच-पड़ताल से नए प्रश्न उत्पन्न नहीं होते, जब ऐसा कोई मतभेद नहीं उठता जो लोगों को यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके पास सत्य है, स्वयं बाइबल की खोज करने के लिए प्रवृत्त करे, तब जैसे प्राचीन काल में था, वैसे ही अब भी बहुत से लोग होंगे जो परंपरा से चिपके रहेंगे और जिसे वे नहीं जानते, उसी की उपासना करेंगे।

मुझे दिखाया गया है कि बहुत से लोग जो वर्तमान सत्य के ज्ञान का दावा करते हैं, वास्तव में नहीं जानते कि वे क्या मानते हैं। वे अपने विश्वास के प्रमाणों को नहीं समझते। वे वर्तमान समय के कार्य का उचित मूल्यांकन नहीं करते। जब परीक्षा का समय आएगा, तो जो लोग आज दूसरों को उपदेश दे रहे हैं, वे जब अपने अपनाए हुए मतों की जांच करेंगे, तो पाएंगे कि अनेक बातों के लिए उनके पास कोई संतोषजनक कारण नहीं है। इस प्रकार परखे जाने तक उन्हें अपनी गहरी अज्ञानता का पता नहीं था। और कलीसिया में भी बहुत से ऐसे हैं जो यह मानकर चलते हैं कि वे जो मानते हैं उसे समझते हैं; परन्तु जब तक विवाद उत्पन्न नहीं होता, वे अपनी कमजोरी को नहीं जान पाते। जब उन्हें अपने समान विश्वास रखने वालों से अलग कर दिया जाएगा और उन्हें अकेले खड़े होकर अपने विश्वास की व्याख्या करने के लिए बाध्य किया जाएगा, तब उन्हें आश्चर्य होगा यह देखकर कि जिस बात को उन्होंने सत्य के रूप में स्वीकार किया था, उसके विषय में उनके विचार कितने भ्रमित हैं। यह निश्चित है कि हमारे बीच जीवित परमेश्वर से हटाव और मनुष्यों की ओर मुड़ाव हुआ है, और दैवीय ज्ञान के स्थान पर मानवीय ज्ञान रखा गया है।

“परमेश्वर अपने लोगों को जागृत करेगा; यदि अन्य उपाय निष्फल हो जाएँ, तो उनके बीच विधर्म प्रवेश करेंगे, जो उन्हें छानेंगे, और भूसी को गेहूँ से अलग कर देंगे। प्रभु उन सबको, जो उसके वचन पर विश्वास करते हैं, निद्रा से जाग उठने के लिए बुलाता है। बहुमूल्य ज्योति आई है, जो इसी समय के लिए उपयुक्त है। यह बाइबल का सत्य है, जो उन संकटों को प्रकट करता है जो ठीक हमारे ऊपर आ पड़े हैं। यह ज्योति हमें पवित्रशास्त्रों के परिश्रमी अध्ययन और उन सिद्धांतगत स्थितियों की अत्यन्त गंभीर जाँच की ओर ले जानी चाहिए जिन्हें हम धारण करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि सत्य के सभी पक्षों और स्थितियों की प्रार्थना और उपवास के साथ पूरी तरह और निरंतर खोज की जाए। विश्वासियों को अनुमान और सत्य की प्रकृति के संबंध में अस्पष्ट धारणाओं पर स्थिर नहीं रहना चाहिए। उनका विश्वास परमेश्वर के वचन पर दृढ़ता से स्थापित होना चाहिए, ताकि जब परीक्षा का समय आए और वे अपनी आस्था का उत्तर देने के लिए सभाओं के सामने लाए जाएँ, तब वे अपने भीतर की आशा का कारण नम्रता और भय सहित दे सकें।

“उत्तेजित करो, उत्तेजित करो, उत्तेजित करो। जिन विषयों को हम संसार के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं, वे हमारे लिए जीवित वास्तविकता होने चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि जिन सिद्धान्तों को हम विश्वास के मूलभूत लेख मानते हैं, उनका प्रतिरक्षण करते समय हम अपने को ऐसे तर्कों का उपयोग करने की कभी अनुमति न दें जो पूर्णतः सुदृढ़ न हों। वे किसी विरोधी को चुप कराने में सहायक हो सकते हैं, परन्तु वे सत्य का आदर नहीं करते। हमें सुदृढ़ तर्क प्रस्तुत करने चाहिए, जो न केवल हमारे विरोधियों को निःशब्द कर दें, वरन् जो अत्यन्त निकट और सूक्ष्मतम जाँच-परख को भी सह सकें। जिन्होंने अपने को वाद-विवाद करने वालों के रूप में शिक्षित किया है, उनके साथ यह बड़ा खतरा है कि वे परमेश्वर के वचन के साथ निष्पक्षता से व्यवहार नहीं करेंगे। किसी विरोधी का सामना करते समय हमारा गंभीर प्रयत्न यह होना चाहिए कि विषयों को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि उसके मन में दृढ़ विश्वास उत्पन्न हो, न कि केवल विश्वासी को आश्चस्त करने का प्रयास करें।”

मनुष्य की बौद्धिक उन्नति चाहे जितनी भी हो, उसे एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचना चाहिए कि अधिक प्रकाश के लिए पवित्र शास्त्रों का गहन और निरंतर अध्ययन आवश्यक नहीं है। एक समुदाय के रूप में हमें व्यक्तिगत रूप से भविष्यवाणी के विद्यार्थी बनने के लिए बुलाया गया है। हमें तत्परता के साथ सतर्क रहना चाहिए, ताकि हम उस किसी भी प्रकाश की किरण को पहचान सकें जिसे परमेश्वर हमारे सामने प्रस्तुत करे। हमें सत्य की पहली झलक पकड़नी है; और प्रार्थनापूर्ण अध्ययन के द्वारा अधिक स्पष्ट प्रकाश पाया जा सकता है, जिसे दूसरों के सामने रखा जा सकता है।

"जब परमेश्वर की प्रजा निश्चित हो जाती है और अपने वर्तमान प्रकाश से संतुष्ट हो जाती है, तब हम निश्चय कर सकते हैं कि वह उन पर अनुग्रह नहीं करेगा। उसकी इच्छा है कि वे उस बढ़ते और निरंतर बढ़ते प्रकाश को ग्रहण करने के लिए सदा आगे बढ़ते रहें जो उनके लिए चमक रहा है। कलीसिया का वर्तमान रवैया परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता। एक ऐसा आत्मविश्वास आ गया है जिसने उन्हें यह महसूस करा दिया है कि उन्हें और अधिक सत्य और अधिक प्रकाश की आवश्यकता नहीं है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब शैतान हमारे दाएँ-बाएँ, आगे और पीछे काम कर रहा है; और फिर भी एक प्रजा के रूप में हम सो रहे हैं। परमेश्वर की इच्छा है कि एक आवाज़ सुनाई दे जो उसकी प्रजा को कार्य के लिए जगा दे।" Testimonies, volume 5, 707, 708.